P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भारतीय महिलाओं की वाणिज्य एवं औद्योगिक क्षेत्र में भूमिका (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)

महेन्द्र कुमार खारड़िया
सहायक आचार्य,
एबीएसटी विभाग,
राजकीय लोहिया महाविद्यालय,
चूरू, राजस्थान

सारांश

पिछले कुछ दशकों में भारतीय अर्थव्यवस्था की पेशेवर संरचना में आधारभूत परिवर्तन देखने को मिला है। जहां प्रारम्भ में इस संरचना में पुरुष वर्ग की प्रधानता थी वह अब परिवर्तित होकर महिला प्रधान होती जा रही है जो कि आर्थिक चुनौतियों के क्षेत्र में नित नये आयाम स्थापित कर पुरुषों के बराबर खड़ा होती जा रही हैं। महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में यह एक नई कोशिश है। महिलाएं वाणिज्य व उद्योग जगत में अपनी भूमिका को मजबूत करने में अपनी पूरी ताकत के साथ लगी हुई हैं ताकि वे इस समाज के औद्योगिक क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बना सकें। महिलाओं का वाणिज्य व उद्योग जगत में प्रभावशाली होने को महिलाओं के सशक्तिकरण के रूप में प्रासंगिकता और नीति प्रक्रियाओं के विरोधाभास को परख करने का उद्देश्य अध्ययन में रखा गया है। कागजी सशक्तिकरण के पूरे विचार महिला उद्यमियों के लिये प्रशिक्षण के परे चला जाता है। यह उस तरह की स्वतन्त्रता और उनकी क्षमताओं को सीमित करना विकल्प है। इस शोध–पत्र में भारत की आधी आबादी के उद्योग जगत में महत्वपूर्ण भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने की कोशिश की गई ताकि यह पता लगाया जा सके कि भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाकर उनका अधिक सहयोग लेकर उनकी क्षमताओं का उपयोग किया जा सके तथा समाज व औद्योगिक जगत में महिलाएं भी अपना योगदान दे सकें।

मुख्य शब्द : भारतीय महिला, अर्थव्यवस्था, औद्योगिकीकरण, समाज।

प्रस्तावना

हमारे समाज में पुरुष तथा महिला दोनों की समान भूमिका है। हम नारी की पहचान माँ, बहन, पत्नी तथा नानी, दादी के रूप में करते हैं तथा महिलाओं को सिर्फ घर परिवार तक सीमित रखते हैं। हमारी इस मानसिकता ने महिलाओं के दायरे को बहुत सीमित कर दिया है। इस सम्बन्ध में यह तथ्य प्रासंगिक है कि महिला वह पत्थर नहीं जिसे ठोकर मारी जाये, नारी वह मदिरा नहीं जिसका पान किया जाए, नारी वह पुष्प नहीं जिसको मर्दित कर फेंक दिया जाये, नारी वह पर्वत नहीं जिसको कोई भी लांघ जाए, नारी वह दीवार नहीं जिसको तोड़ा जाए, नारी वह गन्ध नहीं जिसे सूंघा जाए, अपितु नारी वह शक्ति है जिसकी पूजा की जानी चाहिए। प्राचीनकाल में इसी बात को स्वीकार करते हुए मनु ने अपने ग्रन्थ मनुस्मृति में कहा था कि यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। कितनी महानतम बात है कि उस नारी की, जिसकी आराधना मात्र से अलौकिक शक्तियों का वास होता है, उस नारी को आधुनिक काल में भोग–विलास की वस्तु, सन्तानोत्पति का साधन, जनता जनार्दन के मनोरंजन का साधन, पूंजीपतियों तथा जमीदारों की अपनी झोली भरने के निमित्त तथा विज्ञापनों, फिल्मों आदि में अर्थ प्राप्ति के लिए मजबूरन नग्न रूप में प्रदर्शित करतें हैं। वही दूसरी ओर महिलाएं राजनीति, समाज, अर्थशास्त्र, धर्म और उद्योग तथा वाणिज्य के क्षेत्र में उच्च तथा महत्वपूर्ण पदों पर पहुंचकर उन्हें उन पदों पर सुशोभित कर रही हैं। गुप्तजी जैसे सर्वोच्च कवियों के हाथों में वह मात्र अबला रह गयी तो प्रसाद जैसे सर्वोच्च कवियों के हाथों में पड़कर श्रद्धा का प्रतीक बन गयी। जहां गुप्तजी कहते हैं कि –

''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आंचल में है दूध, और आंखों में पानी''

इसी क्रम में बात करें तो महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा कम महत्त्व दिया जाता है। इसी कारण पुरुषों को शिक्षा तथा उन्नति के अधिक मौके मिलते हैं। महिलाओं का परिवार तथा समाज के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षित होना बहुत आवश्यक है। इसी के साथ–साथ महिलाओं के विकास में समाज तथा परिवार का बहुत महत्त्व है। एक महिला ही गृहस्थी को उचित प्रकार से चला सकती है। सन्तान का पालन–पोषण करने में अपने त्याग, धैर्य, परिश्रम, प्रेम, स्नेह, ममता आदि से घर के वातावरण को जीवन्त एवं प्रगतिशील बनाने की दिशा में विशेष महत्त्व पूर्ण योगदान देती है। इसी दिशा में आज की महिलाएं भारतीय अर्थव्यवस्था में वाणिज्य एवं उद्योग जगत के माध्यम से पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रही हैं तथा अपनी जगह को सुरक्षित करने में कदम दर कदम आगे बढ़ती जा रही हैं। इस शोध–पत्र में भारतीय महिलाओं की वाणिज्य व उद्योग जगत में विशेष पहचान रखने वाली महिलाओं के बारे में चर्चा की गई है, जो आज अपनी दृढ़ इच्छा–शक्ति, दया, समर्पण, कड़ी मेहनत और असाधारण प्रतिभा से देश के प्रतिष्ठित औद्योगिक घरानों तथा प्रतिष्ठित वाणिज्य के क्षेत्र में आगे से आगे बढ़ती जा रही है।

शोध कार्य की उपादेयता एवं उद्देश्य

महिलाओं को आज हर क्षेत्र में अपनी योग्यता, दक्षता तथा कार्य के प्रति लगन के कारण पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करने का अवसर मिल रहा है, जिसके कारण भारतीय महिलाओं ने वाणिज्य एवं औद्योगिक क्षेत्र में अपनी योग्यता का भरपूर प्रयोग करते हुए एक अलग मुकाम हासिल किया है तथा सम्पूर्ण विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। प्रस्तुत शोध–पत्र में महिलाओं की वाणिज्य एवं औद्योगिक क्षेत्र में भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने महता प्रयास किया है, जिसके निम्नलिखित उद्देश्य हैं :–

1. भारतीय महिलाओं का वाणिज्य के क्षेत्र में योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
2. भारतीय महिलाओं का औद्योगिक क्षेत्र में भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
3. वाणिज्य एवं औद्योगिक क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व में भारतीय महिलाओं के योगदान का अध्ययन करना।
4. वाणिज्य एवं औद्योगिक क्षेत्र में बढ़ते भारतीय महिलाओं के प्रभाव का अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

भारत वर्ष में नारी का स्थान अति महत्वपूर्ण रहा है। हमारे देश में ''अर्द्धनारीश्वर की अवधारणा'' इसकी सूचक है। प्राचीनकाल से ही घर, परिवार, समाज व राज्य में नारी की अद्वितीय भूमिका रही है। हमारे प्राचीन साहित्य में इसका भरपूर उल्लेख हुआ है। मनुस्मृति में लिखा है कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। अर्थात् जहां महिलाओं को सम्मान दिया जाता है वहां भगवान का वास होता है। यद्यपि नारी पर अनेक प्रतिबन्ध जैसा कि हिन्दी के महान् कवि मैथिली शरण गुप्त ने यशोधना में महिलाओं को अबला (कमजोर) कहते हुए कहा कि ''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी आंचल में है दूध और आंखों में पानी''। कविता में नारी की स्थिति बहुत कमजोर बताई है। आधुनिक समय में शालिनी तिवारी ने अपने शोध–पत्र ''भारतीय महिलाओं की दशा एवं दिशा'' में महिलाओं की दशा एवं दिशा के बारे में बताया कि महिलाओं की स्थिति में अपेक्षाकृत परिवर्तन आ रहा है। इसी क्रम में अंशुमान तिवारी अनिध्य सेन गुप्त ने अपनी पुस्तक ''लक्ष्मीनामा 2018 में महिलाओं की स्थिति में विस्तार से बताया है।

राजस्थान पत्रिका में जुलाई 2017 में मनीष रंजन के एक लेख ''महिलाओं को इन सेक्टर्स में जॉब सबसे ज्यादा पसंद'' के माध्यम से बताया कि महिलाएं वाणिज्य तथा कॉरपोरेट सेक्टर में जॉब को ज्यादा पसंद करती हैं तथा इस क्षेत्र में अपना अधिपत्य स्थापित किया है।

सोम रॉय देव चौधरी ने अपने शोध–पत्र "Status of Women Workforce in Corporate Sector with Refevenee to Gender in Equality in Work Place and Privision of Companies Act 2013" में बताया है कि वाणिज्य तथा कॉपरेट सेक्टर्स में काम करने वाली महिलाओं को कार्यस्थल पर समानता का अधिकार मिलता है तथा पुरुषों के साथ मिलकर अपने कार्य में पुरुषों से बेहतर करने का प्रयास करती हैं।

वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था में अपना योगदान देने वाली महिलाओं के विषय पर बिजनेस टूडे में प्रकाशित लेख में भारतीय महिलाओं के वाणिज्य तथा औद्योगिक क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाने वाली महिलाओं के बारे में बताया है, जिसमें भारतीय महिलाएं पुरुष से कन्धे से कन्धा मिलाकर वाणिज्य क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व में अपनी पहचान बनाई है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली महिलाएं

सबसे पहली भारतीय महिला, जिनका नाम बैकिंग जगत में बड़े अदब से लिया जाता है। वह नैना लाल किदवई, उम्र 55 वर्ष जो एच.एस.बी.सी. भारत समूह की अध्यक्ष प्रमुख है। उन्होंने मन्दी के दौरान भी अपनी नेतृत्व क्षमता से कैनरा बैंक तथा ओरिएण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स को प्रगति की तरफ लेकर गई तथा ओरियण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स के सहयोग से भारत में एक जीवन बीमा संयुक्त कम्पनी शुरू करने में विशेष योगदान दिया तथा उद्योग जगत में अपनी विशेष पहचान स्थापित की। इसी क्रम में उद्योग जगत में जाना–माना औद्योगिक घराना गोदरेज समूह जिसमें एक भारतीय महिला, नाम तान्या, उम्र महज 41 वर्ष है। वह इस समूह में कार्यकारी निदेशक व अध्यक्ष (विपणन) है। उन्होंने कम्पनी में प्रमुख पद सम्भालने के बाद अपनी कम्पनी के ब्राण्ड को लोगों के देखने के नजरिये को बदलवा दिया व कम्पनी को टेलीविजन तथा उत्पाद आधारित प्रोत्साहन के माध्यम से प्रचारित करते हुए कम्पनी के कारोबार को 1100 करोड़ पार करने में अपनी कार्यकुशलता, धैर्य व अपनी औद्योगिक समझ का प्रयोग करते हुए अपनी पहचान को देश तथा

विदेश में अलग मुकाम तक पहुंचाया। बैंकिंग क्षेत्र में ही एक नाम चन्दा कोचर का भी है, जो मुख्य कार्यकारी तथा प्रबन्ध निदेशक ICICI बैंक में है। ICICI बैंक 3.8 करोड़ रुपये की परिसम्पतियों वाला भारत के सबसे बड़े निजी क्षेत्र का बैंक है, जिसकी प्रमुख एक भारतीय महिला ही है। वह दुनियां के 100 सबसे शक्तिशाली महिलाओं की फोर्ब्स की सूची में 20वां स्थान रखती है। इस मन्दी के दौर में भी बैंक की आय को बड़ी मजबूती से अधिक आय वाले बैंक का दर्जा दिलवाया तथा वे कहती हैं कि अभी तो बस शुरूआत है। यह बैंक देश में 1520 से 2000 से अधिक शाखाओं के माध्यम से नेटवर्क को बढ़ाने का उद्देश्य बड़ी मजबूती से आगे बढ़ा रहा है। इसी क्रम में भारत का जाना–माना सबसे बड़ा हॉस्पिटल समूह अपोलो समूह है, जिसकी प्रबन्ध निदेशक भी एक भारतीय महिला है। नाम प्रीति, उम्र 52 वर्ष है। उन्होंने अपनी कार्यकुशलता से अपोलो समूह का पुनर्गठन करते हुए आगे बढ़ाया तथा इसी के प्रयासों से इसी कॉस्पिटल समूह अपोलो को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति दिलवाई। इसी क्रम में एक नाम होटल समूह में जाना जाता है नाम ज्योत्सना सूरी का, जो अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक है। भारत होटल्स उन्होंने अपने पति श्री ललित सूरी की मृत्यु के बाद कारोबार को सम्भाला तथा समूह को एक अलग पहचान दिलवाई। सुनिश्चित किया कि ललित ब्राण्ड सुरक्षित हैं। यह सब करना इतना सरल व आसान नहीं था परन्तु अपनी कार्यक्षमता का भरपूर प्रयोग करते हुए इस मुकाम तक पहुंची। वह वर्तमान में 18 होटल चलाने वाले समूह को अलगे 05 वर्षों में 40 से 50 तक के एक पार्टफोलियो का निर्माण करना चाहती है। दिखने में छोटे कद की है परन्तु व्यवहार तथा अपनी मुस्कान से 05 मिनट में हर समस्या का समाधान कर सकती है। इसी क्रम में शिखा शर्मा का नाम भी प्रचलित है, जो कि एक्सिस बैंक प्रमुख है। उन्होंने ICICI बैंक में बीमा कारोबार शुरू करने का जिम्मा अपने सर लिया तथा प्ब्ब् बैंक निजी क्षेत्र में बीमा कारोबार करने वाला पहला बैंक बना। इसका श्रेय जाता है शिखा शर्मा को। यही महिला बाद में एक्सिस बैंक की प्रबन्धक निदेशक व अध्यक्ष बनी तथा एक्सिस बैंक को एक अलग पहचान दिलायी। वे कहते हैं कि लक्ष्य चाहे कितना ही कठिन क्यों न हो, सही समय पर लिया गया सही निर्णय इसको सरल व सहज बना देता है। शिखा शर्मा का उपनाम विनियोजित सितारा है। अर्थात् भगवान ने इस सितारे को नियोजित करके बनाया है। वे कहती हैं कि एक्सिस बैंक बड़े समूह ऋण और मुद्रा के साथ बुनियादी ढांचे और छोटे व्यवसायों पर भी ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास करने का लक्ष्य रखता है। इसी क्रम में बात करें चित्रा रामकृष्णा जो संयुक्त प्रबन्ध निदेशक नेशनल स्टॉक एक्सचेन्ज है। उन्होंने नेशनल स्टॉक एक्सचेन्ज में अपनी एक अलग जगह बनाई है और शेयर धारकों के हितों को हमेशा ही अपनी प्राथमिकता में रखा है। बिजनेस स्ट्टेर्ड की रिपोर्ट के अनुसार यूटीआई म्यूचुअल फण्ड के अगले प्रबन्ध निदेशक के पद पर भी चित्रा रामकृष्णा का नाम बड़े जोर–शोर से चल रहा है तथा प्रमुख बनने की पूरी सम्भावना भी है। इसी क्रम में स्वाति पीरामिल आयु 53 जो वाईस पीरामिल लाईफ सांइसेज लि. की अध्यक्ष और पिरामिल हैल्थ केयर लि. की निदेशक है। वह भारत की 25 सबसे शक्तिशाली महिलाओं की सूची में आठ बार मनोनीत की जप चुकी है। स्वाति वर्ष 2009–10 में वाणिज्य एसौचैम की एमेक्स चैम्बर की प्रमुख बनने वाली 90 साल में प्रथम भारतीय महिला बनी। उन्होंने जन–स्वास्थ्य सेवाएं और अन्य परियोजनाओं में नवाचारों के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया। इसी कारण भारत के राष्ट्रपति ने सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्मश्री से उन्हें सम्मानित किया है। वे सबसे शक्तिशाली महिलाओं की हॉल ऑफ फेम की भी सदस्य हैं, जिनका भारतीय अर्थव्यवस्था में विशेष योगदान रहा है।

इसी क्रम में बात करें तो राजश्री पैथी का नाम भी उद्योग जगत में मशहूर है जो कि अध्यक्ष और कम्पनियों की प्रमुख तथा भारत डिजाइन फोरम में राजश्री ग्रुप में प्रबन्ध निदेशक भी हैं। उन्होंने अपने नेतृत्व में राजश्री ग्रुप की खाद्य और कृषि व्यापार ऊर्जा, अचल सम्पति, यात्रा, स्वास्थ्य और आतिथ्य तथा कला के क्षेत्र में अपनी पकड़ को मजबूती से आगे बढ़ाया है। इसी क्रम में वीनिता बाली का नाम भी चर्चा में है जो कि ब्रिटानिया ग्रुप की प्रमुख व अध्यक्ष है, जिन्होंने कम्पनी की कमान बहुत ही नाजुक स्थिति में सम्भाली तथा औद्योगिक समझ व धैर्य का परिचय देते हुए चार वर्ष में कम्पनी की आय डबल करने एवं अपनी किस्मत पलटने में कामयाब रही। औद्योगिक जगत में ब्रिटानिया ग्रुप को एक अलग पहचान दिलवाई तथा शुद्धता के साथ बेहतर पौषण के लिए ग्लोबल एलायन्स के साथ मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति दिलवाई।

इसी क्रम में मल्लिका श्रीनिवासन, उम्र 50 वर्ष, जो कि टैफे अर्थात् ट्रैक्टर एवं कृषि सम्बन्धित उपकरण कम्पनी की निदेशक भी हैं। इन्होंने लकीर के फकीर तथा पुरुष प्रधानता के क्षेत्र में अपनी अलग छाप छोड़ी तथा इन्होंने महान् संचार, कौशल तथा कार्यकुशलता से मन्दी के माहौल में अच्छा कार्य करते हुए बैंग्लोर में भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) द्वारा आयोजित 15वीं गुणवत्ता शिखर सम्मेलन में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए मजबूत प्रतिबद्धता से अपनी कम्पनी को इस मान्यता वाली पहली ट्रैक्टर कम्पनी का दर्जा दिलवाया। वह कहती हैं कि नारी शक्ति वह शक्ति है जो समाज में पुरुषों से तुलना करने के लिए अपने योगदान को और अधिक प्रखरता के साथ उभार रही है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि महिलाओं ने वाणिज्य व उद्योग जगत में पुरुषों के सामने चुनौतियां पेश करते हुए भारतीय अर्थव्यवस्था में अपने योगदान का महत्त्व पेश कर रही है। जो पहले सोचना ही सम्भव नहीं था वह हकीकत में हो रहा है। महिलाएं वाणिज्य व उद्योग में अपनी पकड़ बजबूत बनाने में कदम दर कदम फासलों को कम करने में रात व दिन लगी हुई हैं। वह

दिन दूर नहीं जब भारतीय महिलाएं देश ही नहीं वरन् विदेशों में भी अपनी कामयाबी को प्रदर्शित करेंगी। आज भी कई भारतीय मूल की महिलाएं विदेशी कम्पनियों को सम्भाल रही हैं, जिसमें पहला नाम इन्दिरा नूई का है जो पेप्सीको की प्रमुख अध्यक्ष हैं। उन्होंने पुरुषों के आधिपत्य वाले क्षेत्र में अपनी मजबूत पकड़ बनाई है तथा कदम दर कदम आगे बढ़ रही है।

अनेक त्रासदियों, तनावों, कुण्ठाओं और अत्याचारों को सहने के उपरान्त भी आज नारी की स्थिति में बहुत परिवर्तन हुआ। उसे अनेक अधिकार, स्वतन्त्रताएं और अवसर प्राप्त हुए हैं। परन्तु अभी भी पुरुषों को अपनी मानसिकता में कुछ और परिवर्तन करने की आवश्यकता है। नारी को भी अपने महत्त्व व गौरव के अनुकूल ही आचरण करने की आवश्यकता है। आज यह भी आवश्यक है कि पुरुष समाज अपने दृष्टिकोण को बदले, जिससे महिलाएं पुरुषों के समकक्ष खड़ी होकर मनुष्य की प्रगति में अपना योगदान कर सकें। एक कहावत है कि पुरुषों की तरक्की में महिलाओं का सबसे बड़ा हाथ होता है। इसी कहावत को सच्च करने के क्रम में पुरुषों को भी अपनी पत्नी की तरक्की तथा उद्योग जगत में आगे बढ़ने के मौके देने तथा प्रत्येक कठिनाई को दूर करने में मदद करने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि बरसाती नदी की गति अपने कूलों को तोड़ती–फोड़ती तेज गति से अमर्यादित न हो जाए। तभी वह अपने उच्च पद को प्राप्त कर सकेगी।

'महिला का विकास ही देश का विकास है, नारी शक्ति का सम्मान ही राष्ट्र का समान है।'

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *M. N. Srinawaran : The Changing Position of Indian Women.*
2. *A. S. Alteker : The Position of Women in the Hindi Civilization*
3. *मैथिली शरण गुप्त : यशोधरा महाकाव्य*
4. *जय शंकर प्रसाद : कामायनी साहित्य काव्य*
5. *अंशुमान तिवारी, अनिध्य सेन गुप्त : लक्ष्मीनामा 2018*
6. *शालिनी तिवारी : शोध–पत्र – भारतीय महिलाओं की दशा एवं दिशा*
7. *करण बहादुर : महिला अधिकार व सशक्तिकरण*
8. *डॉ. अरविन्द महिला, डॉ. सुरेन्द्र कटारिया : भारत में महिला सशक्तिकरण*
9. *बिजनेस टूडे पत्रिका 2018, 2019*
10. *दैनिक भास्कर*
11. *राजस्थान पत्रिका*

वेबसाईट

1. *fortuneindia.com - Feb. 2019*
2. *https://www.businesstoday.in*
3. *https://www.fortuneindia.com*